शुष्क क्षेत्रों में महिला उद्यमिता विकास

सोमा श्रीवास्तव एवं प्रतिभा तिवारी

2012

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
जोधपुर 342 003, राजस्थान

उद्यमिता का विकास किसी हद तक समाज में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व मनोवैज्ञानिक कारकों पर निर्भर करता है। उदारीकरण व वैश्वीकरण के युग में आर्थिक विकास की गति को तीव्र बनाये रखना सभी राज्यों के लिये एक चुनौती है। राजस्थान राज्य में जहाँ कृषि परिस्थितियाँ विषम हैं उद्यमिता विकास आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। आर्थिक विकास की गति को तीव्र बनाये रखने के लिये यह जरूरी है कि इसमें राज्य की आधी आबादी यानी महिलाओं को भागीदार बनाया जाये ताकि आश्रित जनसंख्या में कमी हो तथा कार्यशील आबादी का विस्तार हो जो कि अंततोगत्वा राष्ट्रीय सकल उत्पादन में न केवल वृद्धि करेगा बल्कि राज्य के विकास को तीव्रतर गति प्रदान कर सामान्य जीवन स्तर में भी आशातीत सुधार करेगा। महिलाओं द्वारा निम्नलिखित उद्यमों को अपनाकर एक सफल लघु–उद्योग इकाई की स्थापना की जा सकती है तथा इसके लिये सरकार द्वारा विभिन्न संस्थानों में प्रशिक्षण कार्यक्रम व बैंको द्वारा लघु ऋण की भी व्यवस्था की जाती है।

परिरक्षण उद्योग : फल व सब्जियों का उत्पादन मौसम के अनुसार होता है। यदि इन्हें समय पर परिरक्षित कर लिया जाये तो इनका न केवल घरेलू स्तर पर उपयोग कर सकते हैं, बल्कि इनका विपणन कर अधिक आय भी प्राप्त कर सकते है। फल व सब्जियों के मूल्य संवर्धित उत्पाद भी आय प्राप्त करने का अच्छा साधन है। जैसे जैली, स्क्वैश, लाइम ज्यूस कार्डियल, मुरब्बा, कैण्डी, सिरका, अचार, पापड़ आदि। इन्हे बनाने की तकनीकी सरल होने के साथ–साथ अधिक पूंजी निवेश के बिना भी स्थापित

की जा सकती है तथा अच्छी आय भी प्राप्त की जा सकती है।

मधुमक्खी पालन : मधुमक्खी पालन एक आदर्श व्यवसायिक उपक्रम है जिसे किसान अधिक आय के लिये अपना सकते हैं। इसके लिये कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 1–2 हफ्ते के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। किसी भी आयु के युवक/युवतियों द्वारा इन्हें सीखकर 5000–6000 प्रति माह आसानी से कमाया जा सकता है। मधुमक्खी पालन के लिये अधिक स्थान की भी आवश्यकता नहीं होती व गांव में ही सडक़ के किनारे, खाली पड़ी भूमि, या कृषि योग्य भूमि के चारों ओर भी किया जा सकता है। आदर्श रूप से 1 हैक्टेयर में 5–10 मधुमक्खी कॉलोनी को विकसित किया जाता है। राजस्थान राज्य में इस उद्योग के लिये वृहद संभावनाए हैं। मधुमक्खी पालन को शुरू करने के लिए वसंत ऋतु का चुनाव करना चाहिये, हांलाकि शुष्क क्षेत्रों में अक्टूबर, नवम्बर का समय अधिक अनुकूल होता हैं। क्योंकि इस समय तापक्रम व मधुमक्खी के लिये पराग की उपलब्धता सरसो की फसल के कारण बहुतायत से होती है। इस उद्योग को शुरू करने के लिये भलीभांति प्रशिक्षण लेकर इसे एक आदर्श अतिरिक्त आय के स्त्रोत के रूप में शुरू किया जा सकता है।

मशरूम उत्पादन : मशरूम उत्पादन भी कम जगह व लागत लगाकर आसानी से महिलाओं द्वारा किया जा सकता है। इसके लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित किये जाते हैं। मशरूम उत्पादन के लिये प्रौद्योगिकी को भलीभाँति समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके अभाव में अपेक्षित उत्पादन

न होकर फसल रोगग्रस्त हो जाती है। परन्तु उपयुक्त विधि द्वारा इसकी खेती से 4000–5000 रू प्रतिमाह आसानी से कमाया जा सकता है। हिमाचल प्रदेश व दिल्ली में मशरूम उद्योग काफी फल फूल रहा है। बेरोजगार युवक व महिलाये इसे आसानी से अपना सकती हैं। सामान्य तकनीक से मशरूम उत्पादन करने वालो की अपेक्षा प्रशिक्षण लेकर आधुनिक तकनीकी द्वारा उत्पादन कर हिमाचल की कई कृषक महिलाओं ने अपना अलग ही स्थान बनाया है। सोनल, समस्तीपुर, रांची, हिसार, पंतनगर, लुधियाना, जोधपुर आदि स्थानों पर कृषि अनुसंधान केन्द्र व विश्व विद्यालयमें प्रशिक्षण कार्यक्रम समय समय पर आयोजित कराये जाते हैं।

डेयरी पालन : डेयरी प्रारम्भ से ही मिश्रित कृषि पद्धति का एक अमिन्न अंग रहा है। ग्रामीण भारत में डेरी के उद्योग के रूप में विकसित होने की अपार सम्भावनायें हैं। सावधानी पूर्वक वैज्ञानिक डेयरी पालन अपना कर घर बैठे महिलायें आय उपार्जित कर सकती हैं। इसके लिये कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा समय समय पर ट्रेनिंग दी जाती है। दुग्ध उत्पादन हेतु लाभदायक दुधारू नस्लें जैसे थारपारकर, कांकरेज, साँचोरी, गिर व राठी इत्यादि का चुनाव करना चाहिये। पशुओं की सस्ती व संतुलित पोषण व्यवस्था व स्वास्थ्य नियंत्रण अच्छे नस्ल की पशु खरीद के समान ही आवश्यक है जो कि लगातार उत्पादन क्षमता को बनाये रखने के लिये महत्वपूर्ण है। वैज्ञानिक डेयरी पालन तकनीकी का अच्छी तरह से ज्ञान प्राप्त करके इसे लाभप्रद व्यवसाय के रूप में अपनाया जा सकता है।

वर्मीकम्पोस्ट बनाना : केंचुए को किसान का मित्र माना जाता रहा है ये प्राकृतिक रूप से भूमि की जुताई

कर मिट्टी को भुरभुरा बनाते हैं व वायु संचार तथा जल शोषण में वृद्धि करते हैं। वर्मीकम्पोस्ट का भूमि में प्रयोग करने पर यह नाइट्रोजन 17.5–25 प्रतिशत, फास्फोरस 1.5–2.25 प्रतिशत व पोटाश 1.25–2.0 प्रतिशत तक प्रदान करते है। वर्मीकम्पोस्ट बनाने की विधि आसान व कृषि अपशिष्ट जैसे पत्ती, कचरा, डंठल आदि डालकर कम लागत में खेत पर ही की जा सकती है व छनी हुयी खाद को प्लास्टिक थैलियो या कंटेनर में भर कर बेचा जा सकता है। इसके लिये भी कृषि विज्ञान केन्द्रो व अनुसंधान संस्थाओं द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

सजावटी वस्तुयें / मोमबत्ती बनाना : मोमबत्ती बनाने की तकनीक आसान व कम लागत वाली है। आजकल बाजार में रंग बिरंगी व सजावटी, मोमबत्तियाँ उपलब्ध हैं जिन्हें बनाना आसान है व कच्चा माल भी बाजार में आसानी से मिल जाता है। मोमबत्ती बनाने की ट्रेनिंग सरकार के द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में जाकर प्राप्त की जा सकती है। शुष्क क्षेत्रों में सौर मोमबती यंत्र का निर्माण काजरी द्वारा किया गया है। जिससे कृषि कार्य करते हुए भी शाम को मोमबत्ती बनाई जा सकती है।

पौधशाला में पौधे तैयार करने की तकनीक : फलदार तथा वानिकी से संबंधित पौधो की पौधशाला का विकास एक उद्यम के रूप में अपनाया जा सकता है। आमतौर पर एक भूमिगत बेड में (10 x 3 x 1 फीट) में 1 हजार पौधे तैयार कर सकते हैं। इसके लिये तीन चीजों की आवश्यकता होती है: भूमि, बीज व उपयुक्त वातावरण। थोड़ी सी लागत लगाकर परिश्रम से वैज्ञानिक तकनीकी का प्रयोग कर पौधशाला का

निर्माण किया जा सकता है व नर्सरी से पौध बेचकर अच्छी आय कमा सकते हैं।

मुर्गी एवं बकरी पालन : मुर्गी एवं बकरी पालन एक लाभप्रद व्यवसाय है जो दोहरा फायदा प्रदान करता है। अण्डे, दुग्ध एवं मांस का बढ़ता हुआ बाजार इस उद्योग के फलने फूलने में मददगार है। मुर्गी एवं बकरी पालन की तकनीकी जैसे उपयुक्त नस्लों का चुनाव, पोषक राशन/आहार, स्वास्थ्य नियंत्रण, प्राथमिक पशु चिकित्सा, आदि की समुचित जानकारी प्राप्त कर इसे एक लाभप्रद व्यवसाय के रूप में अपनाया जा सकता है। कृषि के अभाव में या खाली पड़ी भूमि पर पोल्ट्री या बकरी फार्म को विकसित कर महिलायें इससे अतिरिक्त आमदनी अर्जित कर सकती हैं।

महिला उद्यमियों के समक्ष उत्पन्न विभिन्न समस्याओं या चुनौतियों को दृष्टिगत कर भारत सरकार ने महिलाओं के लिये विशिष्ट उद्यमिता विकास कार्यक्रम भी चलाये हैं। जिनमें समय–समय पर आयोजित प्रशिक्षण की जानकारी टी.वी. अखबार व इंटरनेट पर प्रकाशित की जाती है।

उपरोक्त विषयों पर विभिन्न विभागों तथा कृषि विज्ञान केन्दों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जाते हैं, जिनका इच्छुक व्यक्ति लाभ उठाकर आयउपार्जन कर सकते हैं।

प्रकाशक : निदेशक, केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर 342 003
सम्पर्क सूत्र : दूरभाष +91–291–2786584 (कार्यालय)
+91–291–2788484 (निवास), फैक्सः +91–291–2788706
ई–मेल : director@cazri.res.in
वेबसाईट : http://www.cazri.res.in
सम्पादन : एम.पी. सिंह, आर.एस. त्रिपाठी, बी.के. माथुर
एम.पी. राजोरा एवं एस. रॉय

काजरी किसान हेल्प लाईन : 0291–2786812

Evergreen 94141 28647